ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या–७२
दिनांक– शुक्रवार, १७ सितम्बर, २०२१

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय बेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 30.1 एवं 26.0 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 92 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 87 प्रतिशत, हवा की औसत गति 12.0 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण 0.8 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 3.0 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 29.4 एवं दोपहर में 31.6 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में 4.4 मि0मी0 वर्षा रिकार्ड हुई।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(18–22 सितम्बर, 2021)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 18–22 सितम्बर, 2021 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलो में आसमान में हल्के से मध्यम बादल छाये रह सकते हैं। अगले 12–24 घंटों के दौरान तराई एवं मैदानी जिलों के ज्यादातर स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने का अनुमान है। इसके बाद की अवधि में वर्षा की सक्रियता में कमी आने के साथ–साथ 1–2 स्थानों पर हल्की वर्षा हो सकती है।
- इस अवधि में अधिकतम तापमान 31–34 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है। जबकि न्यूनतम तापमान 24–27 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 60 से 65 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में पूरवा हवा चलने का अनुमान है। औसतन 08–10 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से हवा चलने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- अगले १२-२४ घंटों के दौरान अनेक स्थानों पर हल्की से मध्यम बर्षा होने की संभावना को देखते हुए किसान भाई इस अवधि में कीटनाशी दवाओं का छिड़काव स्थगित रखें। कीटनाशी दवाओं का छिड़काव आसमान साफ रहने पर हीं करें। धान, मक्का, खरीफ प्याज, चारा एवं अन्य सब्जियों की फसलों में आवश्यकतानुसार नत्रजन उर्वरक का व्यवहार करें।
- पिछात धान की फसल जो कल्ले निकलने की अवस्था में ३० किलोग्राम नेत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेशन करें। फसल की इस अवस्था में तना छेदक (स्टेम बोरर) एवं पत्ती लपेटक (लीफ फोल्डर) कीट की निगरानी करें। प्रकोप दिखाई देने पर बचाव के लिए करताप हाईड्रोक्लोराईड दाने-दार दवा का १० किलोग्राम प्रति एकड़ की दर से व्यवहार करें। किसान भाई नेत्रजन उर्वरक के साथ बताई गयी कीटनाशक दानेदार दवा को अच्छी प्रकार से मिलाकर खेतों में समान रुप से व्यवहार करें।
- अगात बोयी गई धान की फसल जो गाभा निकलने की अवस्था में आ गयी हो, उसमें ३० किलोग्राम नेत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेशन करें। धान की फसल जो दुग्धाअवस्था में आ गयी हो उसमें गंधी बग कीट की नियमित रुप से निगरानी करें। इस कीट के शिशु एवं पौढ़ दोनों जब पौधों में बाली निकलती है तो यह बालियों का रस चुसना प्रारंभ कर देती हैं जिससे दाने खोखले एवं हल्के हो जाते हैं तथा छिलका का रंग सफेद हो जाता है। धान की दुग्धावस्था में यह पौधों को अधिक क्षति पहुचाती है जिससे उपज में काफी कमी होता है। इसके शरीर से विशेष प्रकार का बदबु निकलती है, जिसकी वजह से इसे खेतों में आसानी से पहचाना जा सकता है। इसकी संख्या जब अधिक हो जाती है तो एक-एक बाल पर कई कीट बैठे मिलते है।
- विगत माह रोपी गई फूलगोभी में आवश्यकतानुसार निकौनी करे एवं फसल में पत्ती खाने वाली कीट (डायमंड बैक मॉथ) की निगराणी करे। इस कीट के पिल्लू फूलगोभी की मध्यवाली पत्तियों तथा सिरवाले भाग को अधिक क्षति पहुँचाती हैं। शुरुआती अवस्था में यह पिल्लू पत्तियों की निचली सतह में सुरंग बनाकर एवं उसके अन्दर पत्तियो को खाता है। इस कीट से वचाव हेतु स्पेनोसेड ४८ इ०सी० दवा एक मि०ली० प्रति ४ लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- बैगन की तैयार पौध की रोपाई करें। रोपनी से पहले १ ग्राम फ्युराडान ३ जी० दानेदार दवा प्रति पौधा की दर से जड़ के पास मिट्टी में मिला कर रोपनी करें। अगात रोपी गई बैगन की फसल में तना एवं फल छेदक कीट की निगरानी करें। इस कीट का आक्रमण होने पर कीट से ग्रसित तना एवं फल की तुराई कर मिट्टी में गाड़ दें। यदि कीट की संख्या अधिक हो तो स्पिनोसेड ४८ ई०सी०/१ मि०ली० प्रति ४ लीटर पानी या क्वीनालफॉस २५ ई०सी० दवा का १.५ मि०मी० प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करे।
- सब्जियों की नर्सरी में लाही, सफेद मक्खी व चूसक कीड़ों की निगरानी करें। ये कीट विषाणु जनित रोग के लिए वाहक का काम करते है। इससे बचाव के लिए इमिडाक्लोरोप्रिड दवा का ०.३ मी.ली. प्रति लीटर पानी की दर से घोल कर छिड़काव करें। नर्सरी से खरपतवार समय-समय पर निकालते रहें ताकि स्वस्थ पौध मिल सकें।
- मिर्च की फसल में विषाणु रोग से ग्रसित पौधों को उखाड़कर जमीन में गाड़ दे, तदुपरांत इमिडाक्लोप्रिड एक मी०ली० प्रति ३ लीटर पानी की दर घोल बनाकर छिड़काव करें।
- बरसात के दिनों में परती खेतो एवं खेतो के मेड़ पर अत्यधिक दुब, मोथा, घास वाली जंगल उग आते है, जिसमें कीट-व्याधि अपना निवास स्थान बनाकर अपने अण्डे को सुरक्षित रखते है। अण्डे से पिल्लू बनते ही ये आस-पास के फसलों में घुस जाते हैं एवं पौधे की शाखाओं को खाकर अत्यधिक नुकसान पहुँचाते हैं। अतः इन जंगलों को नष्ट करने के लिए खरपतवारनाशी दवा ग्लाइफोसेट ४१ : एस०एल० का १०-१५ मि०ली० प्रति लीटर पानी की दर से घोल कर कड़ी धूप के वक्त छिड़काव करें। अच्छे परिणाम के लिए साफ पानी का प्रयोग करें। छिड़काव के बाद छिड़काव वाले यंत्र की सफाई अवश्य कर लें। इस दवा को किसी भी खड़ी फसल में छिड़काव कदापि नहीं करे।

आज का अधिकतम तापमानः 30.5 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 2.0 डिग्री सेल्सियस कम	आज का न्यूनतम तापमानः 26.0 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 0.5 डिग्री सेल्सियस अधिक

(डॉ0 गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी

(डॉ0 ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी